{ रावण का नाश...! }

दशहरे की तैयारियाँ हर स्थान पर ज़ोड़ों से चल रही हैं। सभी बड़े बड़े रावण के पुतले बनाकर उसके अंदर बम, पटाखे डालकर एक भयावह आकृति को अंजाम दे रहे होंगे। इतना अकूत धन ऐसे कार्य में लोग लगा रहे हैं, जो कि व्यर्थ है। फिर भी विजयादशमी मनाने का उनका उमंग-उल्लास इन बातों पर गौर करने के लिए नहीं कहता। उन्हें तो सिर्फ लगाना है। लेकिन आज हम सभी का संकल्प चलता तो है कि इतना कुछ जीवन में बदल रहा है, लेकिन रावण को जलाना बंद नहीं हो रहा है। क्या रावण अभी तक भी ज़िंदा ही है? इन सब बातों को हम थोड़ा समझते हैं...

धर्मशास्त्र के अनुसार रावण और राम का युद्ध एक काल्पनिक घटना है, ना कि वास्तविकता। इस काल्पनिकता को लोगों ने इतना तूल दिया कि आज वो वास्तविक नज़र आता है। और भ्रम की स्थिति तो यहाँ तक है कि लोग दशहरे पर रावण को भी विद्वान मानकर सम्मान देते और राम को भी। लेकिन हम अगर आपके समाने शर्त रखें कि आज भी यदि एक राम की मूर्ति और एक रावण की मूर्ति सामने हो और आपसे कहा जाए कि आपको इसमें से एक मूर्ति चुननी है, तो आप कौन सी मूर्ति चुनेंगे? आप सबकी तरफ से यदि हमें चुनना हो तो हम निश्चित रूप से राम की मूर्ति चुनेंगे, क्योंकि राम गुणवान थे, चरित्रवान थे, रूपवाण थे, विवेकशील थे, वहीं रावण अहंकारी था, तो निश्चित रूप से हम राम को ही चुनेंगे। लेकिन आज के कलियुगी दशा में इस मूर्ति का स्वरूप यदि थोड़ा सा बदल दिया जाए, राम की मूर्ति लकड़ी की है, रावण की सोने की, और आपसे कहा जाए कि आप कौन सी मूर्ति चुनेंगे तो बहुत सारे लोगों का कहना होगा कि कौन जा रहा है गुणों को देखने, हम तो रावण की मूर्ति को ही उठा लेते हैं।

आज हमारे मनोभाव, नज़रिये, दृष्टिकोण के अंदर लोभ लालसा इतनी गहराई से लिप्त है, भरी पड़ी है कि हम चुनेंगे ही रावण की मूर्ति, क्योंकि उसके अंदर सोना जुड़ गया ना। सोना जुड़ गया का अर्थ यह है कि जैसे ही कुछ चमक दिखी, जैसे ही कुछ अलग दिखा, कुछ चेंज हुआ, तो हम आकर्षण में सारी मर्यादायें भूलकर उसी चीज को पकड़ेंगे। बात सही है कि नहीं, आप बताओ। भाव इसका ये हम आपको समझाना चाहते हैं कि मनुष्य की मनोवृत्ति को अगर हम जानना चाहते हैं तो भावनाओं से काम नहीं चलेगा, उसकी बुद्धि की भी परख ज़रूरी है कि वो क्या सोच रहा है। आज के समय में सारे मूल्य, सारी मान्यतायें, धारणायें सब नष्ट हो चुकी हैं और लोग वही काम कर रहे हैं जो अमर्यादित हैं, मूल्य और मान्यताओं के विरूद्ध हैं, और बात कर रहे हैं रावण को मारने की! अब हम मूल बात पर आते हैं कि चाहे आज कोई माने या ना माने, लेकिन सबको ये बात पता है कि सबके अंदर ये सारी बातें घर कर चुकी हैं, इसलिए रावण को मारने के लिए सबसे पहले ये जानकारी ज़रूरी है कि रावण मरेगा कैसे? इसीलिए शास्त्रगत उल्लेख कहता है कि रावण को मारने हेतु उसके अंदर छुपे हुए रहस्य को जानना ज़रूरी है, अर्थात् कोई न कोई विभीषण बने, तभी रावण के मरने का रहस्य पता चलेगा। इसलिए भले विभीषण को लोग गलत नज़र से देखते हों, कि वो घर का भेदी था, लेकिन किसी के अनैतिक काम को बंद करवाना, उसके विरूद्ध जाना, ये धर्मसम्मत है, धर्म विरूद्ध नहीं। इसलिए हरेक आत्मा आज इतना गूढ़ रूप से दसों विकारों के वश है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, निंदा, घृणा, आलस्य और भय। इतने वश हैं कि उन्हें पता ही नहीं चल रहा है कि करें क्या। इसलिए हम सभी परमात्मा के बच्चे जो इस समय रावण को मारने की युक्ति जानते हैं, अर्थात् विभीषण ही सही मार्ग सबको दिखा सकते हैं। रावण रूपी काल्पनिकता आज हमारे अंदर वास्तविकता के रूप में है, जो ना चाहते हुए भी बीच-बीच में किसी न किसी विकार के वश होकर गलत काम करते हैं। इस दुनिया में लोग अधर्म में रहकर धर्म की बात करते हैं, और परमात्मा धर्म रीति को विधिपूर्वक सिखा रहा है, कि जबतक हमारे अंदर का रावण पूरी तरह से नष्ट नहीं होगा, मतलब जब तक हमारा मन इन विकारों से छुटकारा नहीं प्राप्त कर लेगा, तब तक सोने की लंका में प्रवेश करना हमारे वश में नहीं है। तो आओ इस रहस्य को गहराई से समझकर इसपर अच्छी तरह से विचार करके दशहरे के साथ न्याय करें।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी अध्यक्षा सोनिया गांधी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।

चण्डीगढ़। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर जस्टिस राजेश बिंदल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उत्तरा।

रोपड़-पंजाब। विधानसभा के स्पीकर के.पी.एस. राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.नम्रता।

बीकानेर-राज.। डॉ. बी.आर छीपा,वाइस चांसलर,स्वामी केशवानन्द राजस्थान एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमल।

मुज़फ्फरनगर-गांधीनगर। जेल अधीक्षक अरुण कुमार सक्सेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

भद्रक-ओडिशा। पंडित बिरेन्द्र पण्डा,आर्य समाज को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. रश्मि। साथ हैं ब्र.कु. संध्या बहन।

बड़ौत-उ.प्र.। एस.डी.एम. अरविंद कुमार दिर्वेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी।

तिनसुकिया-असम। जिला उपायुक्त ओ.एस. सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी।

दिल्ली-संतनगर। म्युनिसिपल काउन्सलर कोसतुबानन्द बालोदी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लाज बहन।

वल्लभनगर-राज.। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सेंट्रल जेल में आयोजित कार्यक्रम में सभी कैदी भाइयों को अपने जीवन से बुराइयों को त्यागने की प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. ज्योति। साथ हैं ब्र.कु. बहनें।

सोजत सिटी-राज.। पुलिस स्टेशन में सी.आइ. सर और स्टाफ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कविता तथा ब्र.कु.आरती।